विचार बिन्दु

दूसरे का अपराध सहन कर अपराधी पर उपकार करना, यह क्षमा का गुण पृथ्वी से सीखना और पृथ्वी पर सदा परोपकार रत रहने वाले पर्वत और वृक्षों से परोपकार की दक्षता लेना। –कृष्ण

भारत के 42.6 प्रतिशत स्नातक ही रोज़गार पाने की योग्यता रखते हैं।

बेरोज़गारी भारत की सबसे बड़ी समस्याओं में से एक है। आज़ादी के बाद हुए सारे विकास के बावजूद यह समस्या कम होने का नाम ही नहीं ले रही है। एक बात यह और हुई है कि स्वाधीन देश में शिक्षा का बहुत विस्तार हुआ है और उसी के साथ शिक्षा के प्रति आम जन का रुझान भी बढ़ा है, परिणामत: पहले से कहीं बहुत ज़्यादा लोग शिक्षा प्राप्त करने लगे हैं। लेकिन इस उपलब्धि का एक सह परिणाम यह भी हुआ है कि जिन्होंने शिक्षा प्राप्त की है वे इस बात को लेकर असंतुष्ट हैं कि उन्हें अपनी अर्जित शिक्षा के अनुरूप रोज़गार नहीं मिल पा रहा है। आए दिन हमारे अख़बारों में ये ख़बरें छपती हैं कि अमुक बहुत छोटी नौकरी के लिए स्नातक, स्नातकोत्तर, यहां तक कि पी.एच.डी. की उपधि प्राप्त युवाओं ने भी आवेदन किया है। इधर रोज़गार के परिदृश्य में एक बड़ा बदलाव यह आया है कि देश में जहां बहुत लम्बे समय तक सरकार सबसे बड़ी रोज़गार देने वाली इकाई थी, अब आहिस्ता-आहिस्ता उसने अपनी यह भूमिका बदल ली है। कल तक जो बहुत सारे काम सरकारें किया करती थीं वे काम अब निजी क्षेत्र करने लगा है, परिणामत: सरकारी नौकरियां बढ़ने की बजाय कम होती जा रही हैं। सरकार में नौकरी के लिए चयन की एक सुनिश्चित प्रक्रिया होती थी, उससे हटकर निजी क्षेत्र अलग तरह से अपने कर्मचारियों का चयन करता है।

हाल में एक अमरीकी कंसलटेंसीफ़र्ममर्सर/मेटल की एक रिपोर्ट आई है, जिसका शीर्षक है 'इण्डियाज़ ग्रेजुएट्स स्किल इण्डेक्स-205'। कंसलटेंसीफ़र्म ने भारत के दो हज़ार सात सौ से ज़्यादा अकादमिक परिसरों और दस लाख से ज़्यादा विद्यार्थियों का गहन अध्ययन करके यह जानने का प्रयास किया कि भारत के युवाओं की प्रतिभा का परिदृश्य कैसे बदल रहा है। इस रिपोर्ट के अनुसार भारत के केवल 42.6 प्रतिशत स्नातक ही रोज़गार पाने की योग्यता रखते हैं। इसी के साथ यह भी कि वर्ष 2023 में यह संख्या थोड़ी ज़्यादा, 44.3 प्रतिशत थी। अर्थात रोज़गार पाने की योग्यता रखने वाले स्नातकों की संख्या में कमी आई है। रिपोर्ट में बताया गया है कि रोज़गार देने वाले अपने भावी कर्मचारियों से जो उम्मीदें रखते हैं, और उन युवाओं के पास वर्तमान में जो दक्षताएं हैं उनके बीच गहरी खाई है। रोज़गार देने वाले चाहते हैं कि जो उनके पास रोज़गार लेने आते हैं उनके पास एआई और डेटा एनेलिटिक्स की दक्षता हो, जबकि जो रोज़गार चाहते हैं, उनमें से कम के पास ही यह दक्षता होती है।

आगे कोई चर्चा करने से पहले इस रिपोर्ट में जिन 42.6 प्रतिशत युवाओं को रोज़गार पाने के काबिल बताया गया है, उनके बारे में भी कुछ विचार कर लिया जाए। इन दिनों लोकप्रिय टीवी शो 'कौन बनेगा करोड़पति' अपनी रजत जयंती के अवसर पर '25' शीर्षक से एक ख़ास शृंखला चला रहा है जिसमें लगभग पच्चीस वर्ष की आयु के युवा भाग ले रहे हैं। इस शृंखला में आने वाला हर युवा अपनी सजगता, सूचना संपन्नता, अभिव्यक्ति क्षमता, सोच की परिपक्वता, दृष्टि के विस्तार आदि से हमें चमत्कृत कर रहा है। भारत के युवा की एक तस्वीर यह भी है जो हमें आह्लादित करती है। लेकिन थोड़ा गहराई में जाकर देखते हैं तो पाते हैं कि इस शृंखला में आने वाले अधिकांश युवा आईआईटी या आईआईएम जैसे उत्कृष्ट संस्थानों में अध्ययनरत हैं। यह बात कोई रहस्य नहीं है कि हर बरस लगभग पंद्रह लाख युवा आईआईटी के लिए प्रयत्न करते हैं और उनमें से केवल पंद्रह हज़ार कामयाब होते हैं। कहा जा सकता है कि केबीसी में इन दिनों जो युवा अपनी काबिलियत से हमें चमत्कृत कर रहे हैं वे हमारी युवा जनसंख्या के उत्कृष्टतम हैं। लेकिन ऐसे संस्थान देश में कितने हैं, और उनमें पढ़ने का अवसर कितनों को मिल पाता है! शेष संस्थान हमारे विश्वविद्यालय और छोटे कस्बों और अब तो गांवों के भी महाविद्यालय हैं उनका यथार्थ क्या है! जब औसत की बात की जाती है इन बेहतरीन संस्थानों के युवाओं की वजह से औसत 42.6 तक जा पहुंचता है, लेकिन ज़मीनी यथार्थ बहुत अलहदा और हताश करने वाला है। सच तो यह है कि जैसे हमारे समाज में ग़रीब और अमीर के बीच बहुत बड़ी खाई हौ और वह खाई लगातार चौड़ी होती जा रही है वैसे ही उत्कृष्ट संस्थानों में शिक्षा पा रहे युवाओं और सामान्य संस्थानों में पढ़ रहे युवाओं की दक्षता के बीच भी बहुत बड़ी खाई है और दुर्भाग्य से वह खाई लगातार चौड़ी होती जा रही है।

अगर हमारे संस्थानों में अध्ययनरत कुल युवाओं के आधे से भी कम ही नौकरी पाने की योग्यता रखते हैं, तो यह बात हमारे लिए गहरी चिंता का कारण बननी चाहिए। देश की इतनी बड़ी आबादी की क्षमताओं को हम बर्बाद कर रहे हैं। अगर ये नौकरी नहीं पा सकेंगे तो क्या करेंगे? इनमें जो हताशा और कुंठा पैदा होगी उसकी परिणति क्या होगी?

सोचिये, ऐसे शिक्षण संस्थानों में जिनके पास न पर्याप्त शिक्षक हैं, न पुस्तकालय हैं, न अपने भवन हैं, पढ़ रहे विद्यार्थियों का स्तर कैसा हो सकता है। जो विद्यार्थी हमारे देश के अधिसंख्य शिक्षण संस्थानों में नामांकित हैं, उन्हें हम किस तरह की दक्षता प्रदान कर रहे हैं? कुछ बरस ऐसे संस्थानों में गुज़ारने के बाद बेशक उनके हाथ में एक डिग्री होती है, लेकिन दक्षता शायद ही कोई होती हो। अब ऐसे दक्षताविहीन युवा को कोई भी व्यवसायी क्यों अपने यहां नौकरी देगा? यह आकस्मिक नहीं है कि हमारे आम महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों से निकलने वाले स्नातक एक सामान्य-सा आवेदन पत्र भी लिखने की योग्यता नहीं रखते हैं। एक तरफ रोज़गार परिदृश्य बहुत तेज़ी से बदलता जा रहा है। कम्प्यूटर और एआई हर जगह अपने पांव पसार रहे हैं, हमारे ये युवा इस सबसे एकदम अनजान हैं। मैंने अपने जीवन का बहुत बड़ा भाग ऐसे ही संस्थानों और युवाओं के साथ बिताया है इसलिए मैं उनके यथार्थ से भली भांति परिचित हूं। बीते बरसों में स्थितियां और ज़्यादा ख़राब हुई हैं। हमारे नेताओं ने वोटों की फसल काटने के लिए अंधाधुंध विश्वविद्यालय और कॉलेज तो खोल दिये, लेकिन इस बात की परवाह नहीं की कि वे कॉलेज युवाओं को विकास करने का माहौल भी उपलब्ध कराएं। सारे देश के हालात एक जैसे हैं। इस रिपोर्ट में भी बताया गया है कि टियर-1 के संस्थान सबसे उम्दा हैं जहां के 48 प्रतिशत से अधिक स्नातक नौकरी पाने की योग्यता रखते हैं, इनसे थोड़ा पीछे हैं टियर-2 के संस्थान जहां के 46.1 प्रतिशत और टियर-3 के 43.4 प्रतिशत युवा नौकरी पाने की काबिलियत रखते हैं। अगर हमारे संस्थानों में अध्ययनरत कुल युवाओं के आधे से भी कम ही नौकरी पाने की योग्यता रखते हैं, तो यह बात हमारे लिए गहरी चिंता का कारण बननी चाहिए। देश की इतनी बड़ी आबादी की क्षमताओं को हम बर्बाद कर रहे हैं। अगर ये नौकरी नहीं पा सकेंगे तो क्या करेंगे? इनमें जो हताशा और कुंठा पैदा होगी उसकी परिणति क्या होगी?

जब भी दुनिया के श्रेष्ठ शिक्षण संस्थानों की कोई सूची ज़ारी होती है, हम उसमें भारतीय संस्थानों का नाम देखने को तरस जाते हैं। शीर्ष और उसके पास होना तो दूर हमारे संस्थानों के नाम बहुत नीचे होते हैं। हमारा नेतृत्व इस बात से न तो व्यथित होता है और इस परिदृश्य के बदलाव के लिए सक्रिय होता है। वह अपनी लफ्फाज़ी और खोखली एवं आधारहीन बातों में ही परम सुखी और संतुष्ट है। लेकिन बतौर नागरिक यह हम सबकी चिंता का विषय होना चाहिए कि इस स्थिति को कैसे बदला जाए। कैसे हमारे शैक्षिक संस्थान साधन सम्पन्न हों और कैसे उनकी शिक्षा का स्वरूप ऐसा बने कि वहां से निकलने वाले स्नातक बाज़ार और रोज़गार की मांगों की अपेक्षाओं पर खरे उतर सकें। अगर वर्तमान की चिंताजनक स्थिति लम्बे समय तक बनी रही तो हमें एक अंधकारमय भविष्य के लिए तैयार रहना चाहिए।

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

बायोलॉजिकल क्लॉक के संकेत से नियमित कर सकते हैं शारीरिक गतिविधियां

डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

बदलती जीवनशैली और आधुनिकता की दौड़ में हम बायोलॉजिकल क्लॉक के संकेतों को समझना ही भूल गए है। बायोलॉजिकल क्लॉक यानी कि सर्केड्डियन रिदम को समझना इतना मुश्किल भी नहीं है अपितु यह कहा जाए कि बायोलोजिकल क्लॉक के संकेतों से हम वाकिफ होने के बावजूद उन्हें महत्व नहीं देते और इसी का कारण है कि हम तेजी से मोटापा, डायबिटिज, लिवरं, डिप्रेशन, अनिद्रा और यहां तक की मानसिक बीमारियों की चपेट में आसानी और तेजी से आते जा रहे हैं। यह भले ही आमआदमी के लिए आश्चर्यजनक हो पर जिस तरह से हमारी दिनचर्या घड़ी के हिसाब से चलती है ठीक उसी तरह से हमारे शरीर में प्रकृति द्वारा पहले से ही घड़ी बनाई होती है। बॉडी क्लॉक या सर्केड़ियन रिदम के संकेतों को हम समझने लगे तो स्वास्थ्य से संबंधित बहुत सी समस्याओं से आसानी से समय रहते बव सकते हैं। प्रकृति ने बॉडी क्लॉक में माध्यम से हमें पल पल में संकेत देती रहती है। सोते-जागते उसके संकेत हमें मिलने के बावजूद हम उन्हें जाने अनजाने उन संकेतों को समझने में भूल कर बैठते हैं। जिस तरह से हमारी दिनचर्या घड़ी के हिसाब से चलती है ठीक उसी तरह से हमारी दिनचर्या को जाने अनजाने में बॉडी लॉक नियंत्रित करने में प्रमुख भूमिका निभाती है। सोना-जागना, खाना-पीना, यहां तक कि शरीर का तापमान और शारीरिक गतिविधियों को बॉडी क्लॉक प्रभावित करती है। बायोलोजिकल क्लॉक यानी कि बॉडी क्लॉक हमारी मनोदशा को भी प्रभावित करती है। दरअसल हमारे शरीर को बायोलोजिकल आवश्यकताओं की जानकारी होती है। कब सोना है कब जागना है, कब खाना है कितना खाना है आदि आदि के संकेत स्पष्ट रुप से हमारी बॉडी देती है। होता यह है कि हम उस और ध्यान नहीं देते हैं और उसी के कारण अनेक बीमारियों की जकड़न में आ जाते हैं। यह कोई कपोल कल्पना ना होकर इसके महत्व को इसी से समझा जा सकता है कि 2017 में अमेरिका के तीन वैज्ञानिकों को उनके बॉडी क्लॉक के अध्ययन और निष्कर्ष पर नोबल पुरस्कार मिल चुका है।

यदि हम हमारी परंपरागत दिनचर्या को देखे तो साफ हो जाता है कि बॉडी क्लॉक के बारे में पूरी तरह से समझा जा सकता है। हमारी परंपरागत अधिकांश गतिविधियां बॉडी क्लॉक के अनुसार होती रही है। सुबह सूर्योदय से पहले उठने से लेकर रात को सोने तक की सभी गतिविधियां बॉडी क्लॉक के अनुसार निर्धारित रही है। माना जाता है कि शरीर का सबसे कम तापमान प्रात: 4 से 4.30 के लगभग रहता है। इसी तरह से प्रात: वर्कआउट के स्थान पर योग पर जोर रहता था। सुबह के पूजा पाठ में योग का अपना महत्व रहता था। प्राणायाम, ध्यान, मुद्राओं का प्रदर्षन आदि योग के ही अंग रहे हैं और सुबह के समय इसको प्राथमिकता दी जाती रही है। सुबह के समय कार्टिसोल का अधिक स्त्राव व अन्य कारणों से हार्ट अटैक की अधिक संभावनाएं रहती है। इसी तरह से बॉडी क्लॉक की माने तो प्रात: 10 बजे के आसपास का समय सबसे अधिक एक्टिव होता है तो तीन बजे से पांच बजे के आसपास का समय विचार विमर्श आदि के लिए उपयुक्त माना जाता रहा है। सायं 7 बजे के आसपास शरीर का तापमान अधिक होता है ऐसे में शांत रहना चाहिए। शाम 6 साढ़े 6 बजे ब्लडप्रेशर अधिक होता है ऐसे में दिल के मरीजों को इस समय सतर्क रहना चाहिए। इसी तरह से रात 9 बजे नींद का प्रभाव आरंभ हो जाता है। माना जाता है रात 2 बजे गहरी नींद का समय होता है। शाम 5 साढ़े 5 बजे एक्सरसाइज के लिए उपयुक्त समय माना जाता है। समझने की कोशिश की जाए तो यह गोधूली बेला का समय होता है इसलिए भले ही इसे पोंगा पंथी माना जाए पर सूर्यास्त के समय को टालने पर जोर दिया जाता रहा है। इस समय में कुछ आगे पीछे हो सकता है पर यह साफ है कि बॉडी क्लॉक बड़े ही सिस्टेमेटिक तरीके से काम करते हुए संकेत देती है जिसे समझना और उसके अनुसार दिनचर्या को नियमित करने से बहुत सी शारीरिक मानसिक समस्याओं से बचा जा सकता है।

हांलाकि बॉडी क्लॉक की रिदम व्यक्ति में अलग अलग हो सकती है। इसके साथ ही दिनचर्या के अनुसार उसमें बदलाव होता रहता है। हमारे सोने जागने और खाने पीने के समय आदि को बॉडी क्लॉक सर्वाधिक प्रभावित करती है। शरीर की प्रतिरोधक क्षमता प्रभावित होती है तो नींद नहीं आना, डिप्रेशन, याददाश्त खोना, टेंशन, मानसिक समस्याएं, यहां तक आज की सबसे गंभीर बीमारी टाइप 2 डायबिटीज और मोटापा, दिल की बीमारी और कैंसर तक को बॉडी क्लॉक के इशारों को नहीं समझने को माना जाता है। जिनकी दिनचर्या नियमित नहीं होती है उन्हें ही इन समस्याओं से दो चार होना पड़ता है। शिफ्ट में काम करने वाले, किसी भी कारण से समय पर खाने-पीने या सोने-जागने आदि की चर्या नियमित नहीं होती उन्हें यह बीमारियां अधिक प्रभावित करती है।

पिछले दिनों साइंस पत्रिका में एक शोध प्रकाशित हुआ है। पेनसिल्वानिया के वैज्ञानिकों के इस अध्ययन के अनुसार शिफ्ट में काम करने वाले या सफर में रहने वालों की दिनचर्या के प्रभावित होने के परिणाम हमारे सामने होते हैं। इसी तरह से नींद पूरी और समय पर नहीं लेने से मानसिक बीमारियों की जकड़ में आ जाते हैं। मोटापा, मधुमेह, अनिद्रा और इससे जुड़ी बीमारियों से प्रभावित हो जाते हैं। बॉडी क्लॉक के अनुसार मस्तिष्क या शरीर से मिलने वाले संकेतों पर ध्यान नहीं देने के कारण बीमारियों की जकड़ में आ जाते हैं। संकेत को नहीं समझने के कारण ब्लड प्रेशर, कोलेस्ट्रॉल आदि बढ़ने का कारण भी होता है। सामान्यत: बॉडी क्लॉक 22 से 25 घंटे का होता है। यह लोगों में अलग अलग अवधि का हो सकता है। पर खास बात यह है कि यह पूरी दिनचर्या को नियंत्रित करने के संकेत देता है। समय पर नहीं सोना या भूख लगने पर भी नहीं खाना या गतिविधियों को नियमित नहीं करने से समस्याएं होने लगती है। जिस तरह से बुखार होते ही बीमारी का संकेत मिल जाता है ठीक उसी तरह से सर्केडियन रिदम अपने संकेत देती रहती है। शरीर की मांग को यह दर्शा देती है ऐसे में उसी अनुसार बदलाव करने से सुधार संभव हो पाता है। हमें बायोलोजिकल क्लॉक के संकेतों को समझना होगा। थोड़ा गंभीर होने पर हम हमारे शरीर की प्रकृति को भली प्रकार से समझ सकते हैं और उसके अनुसार जीवनचर्या को संचालित कर सकते हैं। यदि हम संकेतों को समझने में सफल हो जाते हैं और उनके अनुसार अपनी जीवनशैली में बदलाव लाते हैं तो कई स्वास्थ्य समस्याओं से बच सकते हैं।

–डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा,
(वरिष्ठ लेखक)

बैमौसम बरसात से कच्ची ईंट खराब होने से ईंट भट्टा मालिक व श्रमिक चिंतित

हलैना (निस)। गंजे ने सिर का कराया मुडन तभी पड गए ओले, ऐसी कहावत तब सटीक साबित हुई जब एनसीआर नियम के तहत एक मार्च को भट्ठे पर ईंट पकाई को आंच डाली गई और इलाके के सभी भट्टे की चिमनी से धुआं निकलने लगा। जिसको देख भट्टे मालिक व श्रमिक बहुत खुश थे। इसी दिन देर शाम को तेज हवा के साथ बरसात और ओले पड़ गए।

जिससे भारी संख्या में ईंट नष्ट हो गई। भट्ठे मालिक पहले से ही एनसीआर के नियम से दु:खी थे और अब ये बरसात से हुए भट्टे नुकसान से अधिक हो गए। इन्हे देवताओं के राजा इन्द्र के प्रकोप का सामना करना पड रहा है जो बार बार बरसात कर रहा है। ईंट भट्टों पर 15 से 20 प्रतिशत तक कच्ची ईंट तबाह हो चुकी है और ईंट थपाई स्थल पर बरसात का पानी भर गया। जिससे कच्ची ईंट थपाई कार्य कई दिन तक बन्द रहेगा तथा थपाई करने वाले मजदूर बेरोजगार रहेंगे। बरसात से कच्ची ईंट के नुकसान और काम प्रभावित होने के साथ-साथ थपाई, भराई व निकासी के मजदूरों का बिना कार्य की ऐवज में खर्चा देना आदि को लेकर ईंट भट्टा मालिक व अन्य लोग चिन्तित है।

हलैना में ईंट भट्ठे पर बरसात होने से बड़ी मात्रा में ईंट की सामग्री खराब होने से मजदूर व मालिक चिंतित हो गए।

ईंट भट्टा मालिक संघ के पूर्व अध्यक्ष सन्तोष चौधरी, चंचल जिन्दल व अनिल सैनी ने बताया कि भरतपुर-डीग जिले के एनसीआर क्षेत्र में शामिल होने से उद्योग आए दिन बन्द हो रहे है। सबसे ज्यादा ईंट भट्टा कारोबार पर पड रहा है। दिल्ली व आगरा के ताज महल को प्रदूषण से बचाने के लिए 28 फरवरी तक ईंट भट्टा की आंच डालना और ईंट पकाई के कार्य पर पूर्ण रूप से रोक लगी हुई है नदबई, वैर, भुसावर, नगर उपखण्ड क्षेत्र में 200 से अधिक ईंट भट्टे लगे हुए हैं। सभी भट्टों में एक मार्च को आंच डाली गई थी। शनिवार की शाम मौसम खराब हो गया और बरसात हो गई। जिस बरसात के पानी से प्रत्येक भट्टे पर 15 से 20 प्रतिषत कच्ची ईंट तबाह हो गई। ईंट थपाई स्थल पर पानी भर गया और थपाई का काम प्रभावित हो गया। पक्की ईंट निकासी और कच्ची ईंट भराई का कार्य भी रूक गया। सभी मजदूर अब बिना काम के बैठे हुए है। जिन्हे बिना काम कराए खर्चा देना पडेगा। यदि खर्चा नही दिया तो ये गांव व घर चले जाऐंगे और फिर ये काम पर नही आऐंगे। ये हमारा चिन्ता का विषय है। भट्टा मालिक अनिल कुमार व हन्तरा के विजेन्द्र सिंह ने बताया कि भट्टे पर कच्ची ईंट थपाई वाले श्रमिकों की प्रतिदिन उनके द्वारा थपाई की गई कच्ची ईंटे गिनती हो जाती है और उन्हे 500 से 550 रू प्रति हजार देना तय है।

- **एनसीआर पर पाबंदी हटने पर एक मार्च से ही शुरू हुआ था ईंट बनाने का कार्य**

एक श्रमिक दम्पति प्रतिदिन 2 से 2.5 हजार कच्ची ईंट थाप देता है। उनकी ओर से भले कितना नुकसान हो जाए, उन्हे पैसा देना पडता है। गांव हन्तरा के सन्तोष सिंह ने बताया कि सरकार को भट्टे पर बरसात से होने वाले का मुआवजा देना चाहिए या बीमा करना चाहिए। हर साल नुकसान होता है, सरकार कभी नुकसान पर कर माफ नही करती है। बरसात से कच्ची ईंटों के बचाव को पालीथिन खरीद कर ला रहे है, जिससे कच्ची ईंटों को ढका जा रहा है। उसके बाद भी भारी नुकसान हो जाता है।

बड़ी झील पर बढ़ता डिस्पोजेबल व कचरा शरीर के लिए घातक

उदयपुर । फिशरीज कॉलेज के पूर्व डीन तथा विख्यात मत्स्यकी विशेषज्ञ डॉ वी एस दुर्वे के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए झील कार्यकर्ताओं द्वारा बडी झील पर श्रद्धांजलि स्वरूप स्वच्छता श्रमदान व शरीर संरक्षण संवाद आयोजित किया गया। इस अवसर पर अभिनव स्कूल के एन सी सी कैडेट्स ने झील किनारे डिस्पोजेबल कचरे को हटाया। डॉ दुर्वे के झील संरक्षण कार्यों व शोध परियोजनाओं में योगदान का स्मरण किया । श्रमदान बाद आयोजित संवाद में डॉ अनिल मेहता ने कहा कि बडी झील महाशीर संरक्षण क्षेत्र है। लेकिन, झील पर भारी मात्रा में प्लास्टिक के चम्मच, प्लेट्स व अन्य पॉलीथिन कचरे का विसर्जन हो रहा है। इस सिंगल यूज प्लास्टिक के कण महाशीर मछली की भोजन श्रृंखला में प्रवेश कर उनके पाचन तंत्र व तंत्रिका तंत्र पर विषैला प्रभाव डालेंगे । महाशीर मछलियों का प्रजनन भी बाधित होगा।

तेज शंकर पालीवाल ने कहा कि माइक्रोप्लास्टिक कण सम्पूर्ण जलीय पारिस्थितिकी तंत्र के लिए बहुत बडा खतरा है। झील किनारों तक लोग बेरोकटोक पहुंच झील को गंदा कर रहे हैं । वाहनों की धुलाई भी झील में हो रही है। झील सफाई की कोई पुख्ता व्यवस्था नहीं है। नंद किशोर शर्मा ने कहा कि बडी झील एक मात्र ऐसी झील है जो अब तक प्रदूषण से अछूती रही । बडी झील सज्जन गढ इकोसेंसिटिव जोन में आती है । लेकिन, इसमें प्रदूषणकारी गतिविधियां बढ रही है। कुशल रावल ने कहा कि झील परिधि के 100 मीटर परिधि क्षेत्र को तुरंत प्लास्टिक मुक्त क्षेत्र घोषित कर देना चाहिए। झील किनारे लगने वाली खाने पीने की स्टॉल, ठेलों पर कठोर प्रतिबंध लगाना होगा कि वे झील में कचरा विसर्जन नहीं होने दे। दुपद सिंह ने कहा कि झील किनारे घूमने जाने वाले युवाओं व अन्य भ्रमणार्थियों की जिम्मेदारी है कि वे झील में कचरा, शराब बोतले, सिगरेट के बट विसर्जित नहीं होने दे।

वैश्य महिला महासम्मेलन ने पक्षियों के चुग्गा के लिए बनवाय चबूतरा

गंगापुर सिटी । अंतरराष्ट्रीय वैश्य महिला महासम्मेलन की तहसील इकाई की अनूठी पहल पर नहर रोड स्थित बाबा कुशलगढ मंदिर के पास पक्षियों के चुग्गा के लिए विशेष चबूतरे का निर्माण कराया गया है। रविवार को इस चबूतरे का लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम में सभापति शिवरतन अग्रवाल मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद रहे। विकास दुसाद विशिष्ट अतिथि थे।

सभापति अग्रवाल ने इस पहल को सराहनीय बताया। उन्होंने कहा कि यह पुण्य और धर्म का कार्य है। इससे मूक प्राणियों की सुरक्षा सुनिश्चित होगी और पक्षियों के संवर्धन को बढावा मिलेगा। महासम्मेलन की अध्यक्ष रेखा अग्रवाल ने बताया कि बाबा श्याम के मंदिर में प्रतिदिन हजारों श्रद्धालु आते हैं। वे यहां अनाज भेंट करते हैं, लेकिन यह अनाज पैरों में कुचला जाता था। इसलिए पक्षियों के लिए दाना-पानी की व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए चबूतरा बनाया गया है।

इस पर महासम्मेलन ने करीब डेढ लाख रुपए खर्च किए हैं। चबूतरा 25 गुना 15 फीट के आकार का है। इसके चारों ओर जाल लगाकर कवर किया गया है। चबूतरे में प्रवेश के लिए गेट भी लगाया गया है। महासम्मेलन की ओर से यहां पक्षियों के लिए पानी और चुग्गे की व्यवस्था की जाएगी।

श्रद्धालु अब चबूतरे पर अनाज डाल सकेंगे। इससे पक्षियों को आसानी से भोजन मिल सकेगा। यह कार्य न केवल पुण्य का होगा, बल्कि पक्षियों को चुग्गा डालने वालों को आंतरिक सुख भी मिलेगा। महासम्मेलन की पदाधिकारी डॉ. मनोज जैन ने भी महासम्मेलन की ओर से पक्षियों के लिए चबूतरे निर्माण की पहल को सराहनीय बताते हुए कहा कि निश्चित ही यह कार्य पुण्य कार्य है और इस कार्य से पक्षियों को काफी राहत मिलेगी।

अंतरराष्ट्रीय वैश्य महिला महासम्मेलन की ओर से पक्षियों के चबूतरा निर्माण के लिए जगह उपलब्ध करवाने पर वहां सम्मेलन की महिला पदाधिकारी ने नगर परिषद का आभार जताया। कार्यक्रम के दौरान महासम्मेलन के डॉ. मनोज जैन, सुरेंद्र मित्तल, मनीष जैन, राजेंद्र खारवाल, सुरेश अग्रवाल, शिप्रा गोयल, वर्षा नाटाणी, उर्मिला डांस, सुधा गुप्ता, बबीता डांस के अलावा महासम्मेलन की पदाधिकारी महामंत्री अनीता दुसाद, रेखा जैन, संजना मित्तल, अंजू मालधनी, देवल अग्रवाल मौजूद रहे।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 3 मार्च, 2025

फाल्गुन मास, शुक्ल पक्ष, चतुरथी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2081, अश्विनी नक्षत्र रात्रि 4:30 तक, शुक्ल योग प्रात: 8:57 तक, वणिज करण प्रात: 7:32 तक, चन्द्रमा आज मेष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कुम्भ, चन्द्रमा-मेष, मंगल-मिथुन, बुध-मीन, गुरू-वृष, शुक्र-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज कमार योग सायं 6:30 से रात्रि 4:30 तक है। भद्रा प्रात: 7:32 से सायं 6:03 तक है। आज विनायक चतुरथी है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 8:37 तक, शुभ 9:58 से 11:19 तक, चर 2:02 से 3:23 तक, लाभ-अमृत 3:23 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 6:53, सूर्यास्त 6:25

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

वृष
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। आज समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है।

मिथुन
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। आज धन प्राप्त हो सकता है। व्यावसायिक यात्रा संभव है। शुभ कार्यों में भाग ले सकते हैं।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों में आ रही परेशानियां दूर होने लगेगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नवीन योजना का क्रियान्वयन होगा।

सिंह
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

कन्या
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

तुला
परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिलेगी। मन का भय समाप्त होगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

धनु
आज महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर
घर-परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अस्त-व्यस्त कार्य व्यवस्थित होने लगेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार होगा। व्यावसायिक योजना बनेगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

मीन
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।